वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी – 2016

महोत्सव मुबारक – 2015

पेज 19 का बाकी

करने वाली थी।

महोत्सव मुबारिक के प्रोग्राम के अन्त में सभापति जी ने सबसे पहले परम पूजनीय भगवान देवात्मा का, विकासकारी शक्तियों और सहायकारी शक्तियों का धन्यवाद किया जिनकी अपार सहायता से यह महोत्सव हमारी योग्यता से बढ़कर और निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

फिर सभापति जी ने सब यात्रियों और हाज़रीन का धन्यवाद किया जो इतनी कड़ाके की ठंड में अपने काम और सुखों को छोड़ कर पधारे।

सभापति जी ने सब सभा कराने वालों और अन्य ड्यूटी देने वालों का धन्यवाद किया। भजनों की तैयारी कराने वालों और बड़े सुन्दर भजन गाने वालों का धन्यवाद किया।

खाना बनाने वालों, खिलाने वालों और उसमें अलग अलग सहायता करते रहने वालों का धन्यवाद किया।

सब दानी साहिबान का भी खास धन्यवाद दिया। मल्लेका से श्रीमान जीत सिंह जी आदि ने क्विंटल शुद्ध आटा और एक मन बनस्पति सुंदर चावल लंगर के लिए भेंट किए। श्री धर्म सिंह जी चौहान ने अपने खेत से ताज़ा और उच्च कोटि के खीरे, हमेशा की तरह लंगर के लिए भेंट किए। मौसम का भी सहयोगी रहने के कारण धन्यवाद किया।

इसके बाद सब ने खड़े होकर उच्च भावों के साथ उत्साहित होकर पावन देव आरती के समूह गान का रसपान करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

अन्त में जय ध्वनि की ज़ोरदार गर्जना के साथ यह पावन पर्व सम्पन्न हो गया।

यात्रीगण, अपने अपने ठिकानों के लिए, भोजन खाकर अपनी बसों, कारों, वैनों आदि से शाम तक विदा होते रहे।

(एक सेवक)

कल्याण सत्संग

कल्याण में 18 फरवरी से 21 फरवरी तक (2016) सत्संग होगा। कृप्या पधारे और लाभ उठाएं

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,

House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022

Phone : 0172 -2716914

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 2

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | फरवरी – 2016 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

महोत्सव मुबारक – 2015

परम पूजनीय भगवान देवात्मा संस्थापक देव समाज और देव धर्म का 165 वां मुबारक शुभ जन्म महोत्सव देव आश्रम में (निकट डेरा बस्सी चण्डीगढ़) पिछले वर्षों की तरह बड़े उत्साह वा श्रद्धापूर्वक 24 दिसम्बर 2015 से 27 दिसम्बर 2015 तक मनाया गया।

इस पावन पर्व को मनाने के लिए आवश्यक तैय्यारियां की गईं। महोत्सव हाल को अन्दर से पेंट करवाया गया। चार धर्म सम्बन्धियों ने मिलकर 32 नये बिस्तरे श्रीमान जगजीत सिंह जी ने बनवा कर पहले ही आश्रम में पहुंचा दिए। सुन्दर फूलों के गमले आंगन में तैय्यार किए गए। श्रीमान जगदीष ने सुन्दर झंडे और माटोज, देव आश्रम के गेट और छत पर नये बोर्ड तैय्यार करवाए और उचित स्थानों पर उन्हें फिट करवा दिया।

हाल के अन्दर विशेष नये कारपेट, गद्दे और सफेद चादरों से बहुत सुन्दर बिछाई की गई। गुरू महाराज की छवि रखने के लिए सिंहासन जगदीष जी ने और बहुत सुन्दर बनवाकर फिट किया। हाल के भीतर सैंकड़ों के लगभग बहुत सुन्दर कुर्सियां रखी गई। उच्च कर्मचारियों की बहुत सी फोटो लगवाई गईं।

लंगर का प्रबन्ध बहुत सन्तोषजनक किया गया। यात्रियों को नाशता, सुबह, शाम का खाना समय पर सर्व किया गया। चाय, दूध की, Canteen अलग खोली गई, जो सुबह 5 बजे से लेकर रात 9 बजे तक चलती थी। टैंट, कुर्सियां, मेजें, तख़्तपोश, बैंड बाजा, लाऊड स्पीकर, Video, फोटोज, आदि का आवश्यकता अनुसार प्रबन्ध किया गया। पानी पीने के लिए फिल्टर पानी के बहुत से गैलन खरीदे गए। रोशनी का बहुत ही सुन्दर प्रबन्ध श्रीमान रजिन्द्र जी देहरादून ने पूरी श्रद्धा के साथ किया। उन्होंने सारे Campus को सुन्दर लड़िया लगाकर जगमगा दिया। ऐसी रोशनी पहले कभी नहीं हुई। पौधों में भी लड़ीयां जगमगा रही थीं। श्रीमान दीपचन्द जी मेरठ परिवार सहित, श्रीमान जगदीष जी, मधूसूदन जी और एक दिन चमन जी ने महोत्सव की तैय्यारियों में भाग लिया। जगदीष जी कई दिन चण्डीगढ़ से आ आकर संग्राम करते रहे। श्री रमेश जी आश्रम की देख रेख के साथ तैय्यारियों में भी तहदिल से भाग लेते रहे।

फूलों से भरे गमलों और क्यारियों ने और भी शोभा बढ़ा दी थी। गुरू महाराज की फोटों को चारों तरफ रंग बिरंगी लाईटों से सजाया गया। लम्बे कार मार्ग के दोनों तरफ रंग बिरंगें पचासों झण्डे अपनी शोभा दिखा रहे थे। आश्रम का चप्पा चप्पा साफ सुथरा चमक रहा था। क्या लंगर और क्या रिहायशी हाल और कमरे सब कुछ सुन्दर नज़ारा पेश कर रहे थे।

यात्रियों के लिए और अच्छी गिणती में बिस्तरों का अलग प्रबन्ध किया गया।

यात्रियों के स्नान के लिए हमेशा की तरह गर्म पानी का प्रबन्ध किया गया। सुबह चार बजे ही बूटा सिंह जी कल्याण इस सेवा में तीनों दिन जुटे रहे।

महोत्सव पर आने वाले यात्रियों के आने का नज़ारा बहुत ही आकर्षणीय था। चण्डीगढ़, पंचकूला मोहाली, आदि लोकल यात्रियों को छोडकर बहुत अच्छी गिणती में यात्री पंजाब हरियाणा, राजस्थान, यू.पी., उत्तराखण्ड, दिल्ली आदि से 24 तारीख सुबह ही पधारने लग लगे थे। भिन्न भिन्न स्थान जहां से यात्रीगण पधारे वह यह हैं: –

लंडन से सुखदेव जी चन्द दिल पहले पहुंच गए थे।

पंजाब :– मोहाली, समराला, लुधियाना, संगरूर, मौड़ा, कल्याण, गोनियाना मण्डी, महिमा सवाई, दड़वा, बलटाना, जवाहरपुर, फाज़िलका आदि।

हरियाणा:– अम्बाला शहर, यमुनानगर, मल्लेका, केसूपुरा, पंचकूला, फरीदाबाद, गुड़गांव, करनाल आदि।

राजस्थान: – गंगानगर, पदमपुर, गजसिंह पुर

यू.पी. :– सहारनपुर, देहरादून, लखनऊ, श्री अकबरपुर, कुआंखेड़ा आदि

सभाओं के समय दर्जन से अधिक कारें, बस, स्कूटर, मोटर साईकल, थ्री व्हीलर का बहुत सुन्दर जमघट लग जाता था।

महोत्सव मुबारक और सभाओं का प्रोग्राम इस प्रकार था: –

प्रवेश सभा 4.30 सांयकाल 24 दिसम्बर 2015 :– सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने फरमाया कि जितने जितने देवप्रभाव हमें मिलते हैं और मिलते रहेंगे हमारा भला होता रहेगा। इन सबके लिऐ हम भगवान देवात्मा के श्री चरणों में मिलकर सहाय प्रार्थना करेंगे। हम सब दीन भावी होकर प्रार्थना करें। इसके बाद माननीय सभापति जी ने दीन भाव से भगवान के देव प्रभाव पाने के लिए सहाय प्रार्थना की। इन देव प्रभावों को पाने की जरूरत हम सब को है। इस सारे संसार को है। हम सब अपना शुभ साधन कर सकें। नेचर की सहायकारी शक्तियों की, उच्च लोक वासियों की हमें सहायता प्राप्त हो। हमारा शुभ हो, हमारा भला हो, इसके बाद श्रीमान जगदीश जी कुक्कर ने भजन– "तुम्हारे दर से हे सतगुरू धर्म का दान मिल जावे" का गान किया। इसके बाद सभापति जी ने फरमाया कि हम भगवान देवात्मा का 165 वा जन्म दिवस मना रहे हैं। यूँ तो और लोग भी बहुत से ऐसे उत्सव मनाते हैं और हज़ारों लाखों की संख्या में शामिल होते हैं, बहुत ज्यादा खर्च करते हैं, गीत संगीत भी करते हैं लेकिन वैसे उत्सव मनाने का कोई मतलब नहीं है अगर इन महोत्सवों से कोई उच्च फल पैदा न हो, कोई उच्च प्रेरणा न मिले। हमारा

महोत्सव मनाने का लक्ष्य ऐसा नहीं है। चाहे हम संख्या में कम है, हमारा धर्म दूसरों धर्मों से बिलकुल नया वा अलग है। अगर हम इस अन्तर को समझ पाऐंगे तो हमारा महोत्सव मनाना कुछ हद तक सार्थक हो सकता है। वास्तव में धर्म का सम्बन्ध जीवन से है। हम एक जीवित शरीर और आत्मा हैं। आम तौर पर मनुष्य दिशाहीन जीवन व्यतीत कर रहा है। हमें अपने अस्तित्व के बारे में सोचने का न ही विचार पैदा होता है और न ही समय निकालते हैं। हम जो भी क्रियाऐं करते हैं, उनसे हमारी आत्मा में परिवर्तन आता है, अच्छी क्रियाओं से उच्च और नीच क्रियाओं से नीच परिवर्तन आता है। उच्च क्रियाऐं उच्च जीवन पैदा करती हैं। यह उच्च व नीच क्रियाऐं हमारे भाव कराते हैं। कोई बाहर शक्ति नहीं हैं जो यह क्रियाऐं हमसे कराती है। यह बाहरी शक्ति होने का विश्वास हमारा सबसे ज्यादा नुकसान दायक है। इससे मिथ्या का प्रचार होता है जिसने मनुष्य का बहुत नुकसान किया हुआ है। इस लिए हमारा देव उत्सव मनाना दूसरों के उत्सव मनाने से बिलकुल भिन्न है। गुरू महाराज के प्रभावों के द्वारा हमें जीवन की होश मिलती है मिथ्या विश्वासों से छुटकारा मिलता है। जीवन के उच्च लक्ष्य की पहचान कराई जाती है। अगर यह सब हमारे जीवन में उच्च परिवर्तन आते हैं तो हमारा यह महोत्सव मनाना असल से सफल होगा। हमारा यहां आना सच में सफल होगा, हमारा समय का और धन का खर्च करना सफल होगा। दूसरों की तरह रस्म पूरी करना हमारा लक्ष्य नहीं है। कई घटनाओं को सुनाकर सभापति जी ने समझाने की कोशिश की कि यहां आकर अगर देव प्रभावों को पाएंगे तो हमारा इस महोत्सव को मनाना सफल होगा। यहां आकर गुरू के विशेष प्रभाव मिलते हैं। सभापति जी ने खड़े होकर सब सौभाग्यवान जनों का सन्मान प्रदर्शन किया और स्वागत किया और कामना की सबका इस महोत्सव पर आना सबके लिये लाभकारी सिद्ध हो और हम यहां से खाली न जाऐं। हमारे अन्दर उच्च भाव पैदा हों और हमारा उच्च जीवन में विकास हो और नीच भावों और नीच जीवन से छुटकारा मिल जाए। नीच भावों से जीवन नष्ट होता है और उच्च भावो के पैदा होने से उच्च जीवन में विकास होता जाता है। हमारे नीच अनुराग सिर्फ हमारा अपना ही नुकसान नहीं करते बल्कि अपने सगे सम्बन्धिओं का भी नुकसान करते हैं। जहां देव समाज के वातावरण में आने से जीवन बनता है। अपना तो भला होता ही है। इसके साथ साथ दूसरों का भी भला होता है। जब हम उच्च भावों के साथ दूसरों के साथ जुड़ते हैं तो दूसरों के भले के साथ साथ अपना भला भी साथ साथ हो जाता है। उच्च भावों के प्रभावों से हमारा जीवन बनता है। जितना सम्भव हो हम दूसरों की बुराई न करें। दूसरों के गुण चिन्तन करेंगे तो हमें देव प्रभाव मिलेंगे। नियम पूरे नहीं करेंगे तो उच्च प्रभाव नहीं मिलेंगे। देव प्रभाव नही मिलेंगे। सभा पति जी ने अन्त में सबसे अनुरोध किया कि उच्च जीवन को पाने के लिऐ जीवन के नियम पूरा करें और देव प्रभावों को पाकर यहां से जाएं।

<u>25.12.2015, पहली सभा 9.30 बजे</u> : –

इस सभा का विषय था "परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक सम्बन्ध"। भजन के गान के बाद, गुरू महाराज के अर्चन के बाद देव स्तोत्र का समूह गान वा व्याख्या की गई। फिर सभापति जी ने ज़ोरदार शब्दों

वा भावों से भरकर सहाय प्रार्थना की। फिर उन्होंने बताया कि हमारा सारा जीवन सम्बन्धों का ताना बाना है। हम जो कुछ भी हैं वह विविध प्रकार के सम्बन्धों के कारण ही हैं। हमारा शारीरिक और हार्दिक विकास सम्बन्धों के द्वारा ही होता है। हमारे सम्बन्धी जीवनधारी भी हैं और निर्जीव भी हैं। हवा स्वंय निर्जीव होकर भी जीवधारियों को जीवन देती है। हवा बिना जीवधारियों का जीवन सम्भव नहीं। हवा, विशेषकर उसके भीतर की आक्सीजन गैस मनुष्य के जीवन के लिए ज़रूरी ही नहीं बल्कि परम आवश्यक है और जीवन दायक है। इस साधारण सचाई को समझना कठिन नहीं। इसके बिना हम एक मिन्ट भी नहीं जी सकते। इसी प्रकार पानी भी हमारा परम आवश्यक जीवन दायक सम्बन्धी है। पौष्टिक भोजन भी शरीर के लिए परम आवश्यक है। धरती, सूरज भी हमारे परम सम्बन्धी हैं। इन परम आवश्यक सम्बन्धियों का कोई स्थान नहीं ले सकता। उपरोक्त हमारे सम्बन्धियों को समझने के लिए विशेष मान्सिक शक्तियों और विशेष अधिकारी हृदय की आवश्यकता है।

हमारा अस्तित्व जीवित शरीर और जीवनी शक्ति का सुमेल है। इन दोनों का अकाट्य सम्बन्ध है। इन दोनों में जीवनी शक्ति मुख्य और सार है। क्योंकि अनुकूल हालातों में आत्मा ने ही शरीर का निर्माण किया है। पौधों के शरीर का निर्माण भी उनकी जीवनी शक्ति ही करती है और कोई नहीं। इसका तजरबा भुने हुए दाने को ज़मीन में बोकर देख सकते हैं। इससे ज़ाहिर होता है बीजों की जीवनी शक्तियां ही उनकी निर्माणकारी शक्त्यिां हैं। उसी प्रकार मनुष्य शरीर को भी उसकी निर्माणकारी अर्थात जीवनी शक्ति ही बनाती है। हमारे सब सम्बन्धी, हमारी चिन्ताओं और क्रियाओं को प्रभावित करते हैं, इसलिए मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने परिचालक भावों को जानें, अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं से ही वह अच्छे और बुरे रूप में परिवर्तित होता है। मनुष्य अपने आपको बहुत प्यार करता है, इसी कारण वह अपने परिचालक भावों को नहीं जान सकता। वह अपने प्रति अन्धेरे में है। अपने असली रूप को देखने के लिए परम पूजनीय भगवान की रोशनी के मोहताज हैं। इस रोशनी को देव समाज की भाषा में देव ज्योति कहते हैं। इसको जानना ही अपने आपको जानना है। आत्मिक अन्धकार हर्ता की देव ज्योति इन भावों को देखने के लिए परम आवश्यक है। यह ज्योति किसी सात्विक जीवनधारी के भीतर पैदा नहीं हुई।

मनुष्य के भीतर नीच सुखों के भाव हैं। वह सुख नीच भाव हैं, जो उसकी महा हानि और बर्बादी करते हैं, यह उसके दुखों का कारण है। मनुष्य इन भावों के आगे दुर्बल और बेबस है। परम पूजनीय भगवान के देव असर इनके प्रति घृणा और ग्लानी पैदा करते हैं, इनके भयानक रूप से भयभीत कर देते हैं। पापी मनुष्य आत्मा इन असरों को पाकर पापों से सच्ची मुक्ति या छुटकारा प्राप्त करते हैं। सभापति जी ने बताया कि इन देव असरों को पाकर एक एक पापी आत्मा की किस प्रकार पाप की ज़िन्दगी छूट जाती है, उसके उदाहरण पेश किए। इसलिए बुराई और पाप से छुटकारा दिलाकर श्रद्धेय श्रीमान पी.वी. कनल जी जैसे परोपकारी पैदा किए हैं। उनके भीतर उच्च भावों का विकास हुआ। देवात्मा के तेज के बिना ऐसे उच्च भावों का विकास असम्भव

है। उनका सम्बन्ध आत्मिक रूप दर्शाता, सच्चा मोक्षदाता और सच्चा विकास कर्ता हैं।

इस ब्यान के बाद श्रीमान अजीत सिंह जी मल्लेका के अपने अंदर आए उच्च परिवर्तन का ब्यान किया। सबसे पहले उन्होंने पक्की ईंट का उदाहरण दिया, कि पक्की ईंट को दोबारा कच्चा रेत नहीं बना सकते। उसी प्रकार पक्के हुए मिथ्या विश्वासों को तोड़ना और सच्च दिखाना बहुत कठिन है। भगवान देवात्मा की ज्योति शक्ति के प्रभाव कमाल कर देते हैं और हमारे करीब असम्भव पक्के हुए अन्ध विश्वासों को तोड़कर सच्च दिखा देते हैं। हमने 15 – 20 वर्ष ग्रन्थियों का काम किया, उस समय अपने आपके नहीं देख सके। लोगों से सन्मान पाते पाते हम अपने आपको बड़ा समझते रहे। खाने पीने के लालची होकर खाने पीने में घी आदि खाने के तरीके ढूंडते रहते, ऐसी बातें करते जो किसी के सामने बताने वाली भी नहीं है। जिस देवी ने हमें पढ़ाया (गुरूदेव राज जी की नानी जी) उनका उपकारी और सेवाकारी रूप यहां आकर नज़र आया है। उनका ब्यान सीधे साधे शब्दों में बिना किसी तैय्यारी के बहुत प्रभाव डाल रहा था। उनके भाईयों में जो बोलचाल भी नहीं थी, उसके बाद उनका आज का प्यार भरा सम्बन्ध परम पूजनीय भगवान की महिमा को दर्शाता है।

यह सभा बहुत ही प्रभावशाली थी। परम पूजनीय भगवान के मनुष्यात्मा के साथ सम्बन्ध की ज़रूरत को अधिकारी हृदयों को दर्शाने वाली थी। दर्शक बहुत प्रभावित हुए हैं।

श्री मन्त्री जी ने अगले प्रोग्राम का ऐलान किया।

शाम 4 बजे पब्लिक लैक्चर

इस सभा के सभापति डाक्टर विनाद जी खेड़ा थे, इस समय दो लैक्र हुए।

1) प्रिंसीपल डाक्टर शशी जैन।

2) प्रिंसीपल श्रीमती सुरजीत बराड़।

सभापति श्री खेड़ा साहिब जी ने पहले प्रिंसीपल शशी जैन जी की विशेष मान्सिक योग्यताओं और देव समाजी परिवार से विशेष सम्बन्ध को बताकर परिचय कराया।

प्रिंसीपल शशी जैन जी ने बताया कि उनके लैक्चर का विषय है देव धर्म दर्शन में निरीश्वरवाद।

उन्होंने यह भी बताया कि उपरोक्त विषय को यह भी कह सकते हैं, कि विज्ञान धर्म के विषय में क्या कहता है या भगवान ईश्वर के बारे में क्या कहते हैं। उन्होंने विशाल विश्व का वर्णन करते हुए हमारे सूरज परिवार और उसके बाद हमारी धरती और उसकी गतियों का संक्षेप ज्ञान दिया। उन्होंने धरती के आकार को Perfect बताते हुए कहा कि यदि इसका आकार और बड़ा होता तो, इसके इर्द गिर्द Nitrogen Gas की मात्रा Perfect मात्रा से अधिक होनी थी।

ईश्वरवादी कहते हैं कि विश्व Perfect है तो ही इसका डिज़ाईन अर्थात इसका बनाने वाला भी Perfect है या कमी रहित है। जिस शक्ति ने इसकी सृजना की वह नुक्स रहित या Perfect है।

फिर ईश्वरवादी कहते हैं कि मानव शरीर भी पूर्ण है अर्थात Perfect है। Perfect ईश्वर ने

मानव शरीर को Perfect बनाया है। मनुष्य का दिमाग भी अथाह शक्ति रखता है। मनुष्य की आंखें इतनी Perfect हैं कि 70 लाख रंगों को अलग पहचान सकती हैं। इससे आगे और सूक्ष्म बनावट का वर्णन करते हुए DNA कोड की भिन्नता इस सीमा तक है जो तीन बिलियन शब्दों को प्राप्त है।

भावार्थ यह है कि हमारा विश्व बहुत गुंझलदार और अचरज में डालने वाला है। यह ईश्वरवादी विश्वास करते हैं कि यह पूर्ण है, स्वयम्भू है और इसलिए सब मुसीबतों का वही एक हल करने वाला है, वह ही सब समस्याओं का समाधान है।

मनुष्य के सामने कई प्रश्न वा समस्याएं थीं, जिनके कारण उन समस्याओं का समाधान कर्ता ईश्वर को माना गया: –

1) विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई?
2) मनुष्य की उत्पत्ति का आधार क्या है?
3) अशुभ की समस्या क्या है?
4) अध्यात्मिक जीवन का क्या अर्थ है?
5) विश्व का संचालक कौन है?

ईश्वरवादी उपरोक्त समस्याओं का समाधान ईश्वर या परमात्मा को मानते हैं।

फिर वक्ता ने बताया कि भगवान देवात्मा उत्पत्ति सिद्धान्त को नहीं बल्कि विकासवाद को मानते हैं। वह कहते हैं कि सारा विश्व जड़ (पदार्थ) और शक्ति से संयुक्त है। Matter and Energy। शक्तियां दो प्रकार की होती हैं, एक जीवित शक्तियां और दूसरी निर्जीव शक्तियां। जड़ पदार्थ (Matter) है, दूसरी शक्ति (Energy) है, इनमें अकाट्य सम्बन्ध है।

जीवित शक्तियां समाप्त हो जाती हैं, जीवधारी भी समाप्त हो जाते हैं। विश्व की उत्पत्ति प्रकृति के विकास के नियमों द्वारा हुई है। कोई इसका पैदा कर्ता नहीं है। मनुष्य के लिए आवश्यक हैं कि वह शक्ति के वास्तविक स्वभाव को जाने।

2) मनुष्य की उत्पत्ति का आधार क्या है? ईश्वर वादी ब्रह्मा को सृष्टि का कर्ता मानते हैं। मनुष्य का अस्तित्व गठन प्राप्त शरीर और गठन प्राप्त जीवनी शक्ति है। आत्मा ही शरीर का निर्माण कर्ता है। देव धर्म के अनुसार आत्मा ही शरीर की रक्षा और इसका पालन और इस पर शासन कर्ता है। आत्मा कोई भी क्रिया शरीर के बिना नहीं कर सकता। आत्मा शरीर के द्वारा ही अपने आपको प्रकाशित करती है। यही व्याख्या विज्ञान ने मनुष्य की उत्पत्ति के आधार के विषय में कही है।

3) अशुभ की समस्या क्या है? इसके विषय में भगवान देवात्मा ने विज्ञान की व्याख्या की है। मनुष्य की जो चिन्ताएं, क्रियाएं, प्रेरणाएं विकासकारी नियम के विरूद्ध होती हैं, वह विनाशकारी होती हैं। जो विकासकारी नियम के अनुकूल होती हैं, वह विकासकारी होती है। विनाशकारी चिन्ताएं वा क्रियाएं नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं कहलाती हैं। इनका दास होकर मनुष्य चारों जगतों के लिए हानिकारक बन जाता है। कलकता में काली माता मन्दिर के अन्दर और बुच्चड़खाने में लहू के परनाले बहते हैं। यह जुल्म मनुष्य के नीच भावों का फल है। नीच घृणा, दुष्चिन्ता करवाती है। हानि करवाती है, दूसरे को नीचा दिखाने का यत्न

करती है। चारों जगतों के सम्बन्ध में अशुभ की ओर जाते हैं। सर्वदयालु, सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक गुण जो ईश्वर या परमात्मा में माने जाते हैं, वह आत्म विरोधी होने के कारण ऐसे ईश्वर को मिथ्या प्रमाणित करते हैं।

4) चौथी मानव समस्या है कि अध्यात्म जीवन का अर्थ क्या है:- बापू आसाराम जेल में क्यों है, क्योंकि वह बहका, फुसलाकर भोलेभाले लोगों का शोषण करते हैं।

अपने अस्तित्व के विषय में सच्चा अध्यात्मिक ज्ञान है, अपने परिचालक भाव शक्तियां जानना यदि सात्विक भाव हों अर्थात हमदर्दी शुक्रगुज़ारी आदि उच्च शक्तियों के व्यवहार करना ही अध्यात्मिक क्रियाएं हैं।

5) विश्व का संचालक कौन है? ईश्वरवादी ईश्वर को विश्व का संचालक नेचर के अटल नियम हैं। देवात्मा फरमाते हैं, मैं भी नेचर की उपज हूं। हर अस्तित्व की तरह मैं भी नेचर के नियमों के अधीन हूं। वह मानते हैं कि वैज्ञानिक विधि है, यह एक मात्र सच्चे ज्ञान की विधि है। अन्ध विश्वास वैज्ञानिक विधि द्वारा दूर हो जाते हैं। परमात्मा वा ईश्वर विश्व की आत्म विरोधी व्याख्या है। कारण और असर (Cause and effet) विज्ञान का और वैज्ञानिक विधि का आधार है। परमात्मा को God of gaps कहना पड़ेगा, क्योंकि दयालु ईश्वर की दुनियां में बुराई क्यों है? जुल्म क्यों हैं? छोटी मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार क्यों होते हैं? पेशावर में बेकसूर, मासूम बच्चों का कत्लेआम क्यों हुआ? सब बुराई की जड़ नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं।

देव धर्म दर्शन का उद्देश्य मनुष्य को ईश्वर के महा हानिकारक विश्वास से मुक्त करना है। इसलिए यह ही एक मात्र धर्म दर्शन है जो मनुष्य को अपने आपको समझने का ज्ञान देता है और उसे नीच अनुराग से मुक्त होकर उच्च भावों के विकास मार्ग पर डालता है।

विद्वान वक्ता ने बहुत ही प्रशंसायोग्य भाषण दिया, सबने बहुत लाभ उठाया।

दूसरा लैक्चर

दूसरे लैक्चर के वक्ता थे प्रिंसीपल श्रीमती सुरजीत बराड़। इनके लैक्चर का विषय था, देव धर्म ही सच्चा धर्म है। वह सच्चा धर्म क्यों है?

इनका परिचय करवाते हुए इनके पिता डाक्टर इकबाल सिंह जी के श्रद्धावान और सेवाकारी आत्मा का सन्मान भाव से वर्णन किया। उन्होंने इस बात को भी गहराई से अनुभव किया कि इनके धर्म पति का धार्मिक साथ भी इनके लिए विशेष प्रेरणा और उत्साह वर्द्धक है।

माननीय वक्ता ने मनुष्य के विकास के सिलसिले में पैदायश के बाद धर्म की या पूजा की उत्पत्ति कैसे हुई उसका ज़िकर करते हुए बताया कि मनुष्य जत्थों में रहने लगा और उनमें कुछ ताकतवर उस जत्थे के लीडर बन गए। इन लीडरों को कमज़ोर लोग भेंट देने लगे, और इन लीडरों के मरने के बाद भी मीडियम के द्वारा भेंटें प्राप्त करने लगे। अपनी स्तुति करवाने लगे। यह धर्म और पूजा का आरम्भ था। डर और लालच शुरू से ही धर्म का आधार रहा है। इसी मनुष्य की कमजोरी को देखकर नये नये धर्म खड़े हो रहे हैं। और ऐसा हमेशा होता ही रहेगा।

सब धर्म एक नहीं, उनमें भिन्नता है। परमात्मा के विषय में अनेक धर्मों की शिक्षा भिन्न है। असल में आत्मा, परमात्मा, धर्म के विषय में किसी को सत्य ज्ञान

नहीं, कल्पना मूलक विश्वास हैं। पुराने समय के धर्म कल्पना पर आधारित थे, अब विज्ञान के युग में भी जब सब क्षेत्रों में तब्दीली हो गई है और वह मान्य है, परन्तु धर्म के विश्वास ज्यों के त्यों बने हुए हैं। विकासवाद को सब बच्चे पढ़ते हैं। विकासवाद उत्पत्ति का खण्डन करता है। सरिता मैगज़ीन हिन्दु धर्म की पुरातन धर्म ग्रन्थों की शिक्षा का सबूत समेत पोल खोलता है, वह लेख रोशनी भरपूर होते हैं, परन्तु धर्म के ठेकेदार उन पर भी मुकदमें चलाते हैं।

Huxley साहिब कहते हैं कि धर्मों के नव निर्माण की आवश्यकता है। धर्म तर्क हीनता को छोड़कर व्यवहारों को उच्च बनावें, वही सच्चा धर्म है। कई महान आत्माओं की भविष्य वाणियों का वक्ता ने ब्यान किया कि जिनका इशारा इस तरफ था कि धर्म का नया सूर्य पूर्व से ही निकलेगा।

हक्सले साहिब ने कुछ प्रश्न किए थे, जिनका धर्मों को जबाब देना होगा।

1) मनुष्य क्या है?

2) विश्व क्या है?

3) विश्व में मनुष्य का स्थान क्या है?

4) उसका स्वभाव क्या है?

डाक्टर रबिन्द्रनाथ टैगोर ने तो यहां तक कहा था कि वह धर्म का सूरज पूर्व की ओर से निकलेगा, सम्भव है कि वह उदय हो गया हो।

उन्हें उस समय नहीं पता था कि वह सूरज यू. पी. के एक सम्पन्न परन्तु बहुत पिछड़े और मिथ्या विश्वासों के गढ़ में उदय हो चुका था। उनको शारीरिक, मान्सिक और हार्दिक अद्भुत शक्तियां विरासत में मिली थीं। 16 वर्ष तक उनके गांव में उनका मान्सिक विकास हुआ, परन्तु उसके बाद रूड़की इंजनियरिंग में आरम्भ हुआ, उन्हें निहायत सात्विक पुरूष गुरू के रूप में प्राप्त हुए। जिन्होंने उन्हें यह मन्त्र दिया कि "सदा सत्य बोलो, झूठ कभी न बोलना, चाहे उससे आपको कितनी हानि हो," यहीं से उनके भीतर सत्य अनुराग का विकास आरम्भ हुआ। पूजनीय भगवान भी ईश्वर का बहुत गहरा विश्वास रखते थे, परन्तु ज्यों ज्यों सत्य अनुराग की रोशनी विकसित होती गई और विज्ञान की रूचि बढ़ती गई उनके मिथ्या विश्वास चाहे कितने प्रिय थे, छूटते गए। प्रत्येक विश्वास को परख़ने की विज्ञान मूलक कसौटियां हैं, जिन्हें उन्होंने अपनाया: –

1) नेचर सत्य है, जीवित और अजीवित अस्तित्व सब नेचर के अर्न्तगत हैं और प्रत्येक अस्तित्व जड़ और शक्ति से बना है, इसलिए निराकार कोई नहीं हो सकता।

2) बोध शक्तियां, मान्सिक शक्तियां, सात्विक शक्यिां, अंह सम्बन्धी शक्तियां और देव शक्तियां।

3) तर्क विधि – जो भी बात तर्क द्वारा सिद्ध नहीं होती वह सत्य नहीं हो सकती।

4) नेचर में अटल नियमों का राज्य है। प्रत्येक अस्तित्व अटल नियमों के अधीन हैं। यह कभी कुछ, कभी कुछ नहीं होते।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की आत्मिक गठन मनुष्यों की गठन से भिन्न थी। मनुष्य प्रकृति सुख अनुरागी है, सुख अनुराग से पाप, बुराई और मिथ्या उपजती है। देवात्मा सत्य और हित की अनोखी अनुराग

शक्तियां रखते थे और मिथ्या और पाप के प्रति पूर्ण शत्रुता।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने विज्ञान को आधार बनाकर अपनी देव ज्योति में जो सत्य और तत्व खोजे, उनमें हक्सले साहिब के सब प्रश्नों का उत्तर है। उनकी अध्यात्मिक खोज के विषय थे: –

1) नेचर क्या है?

2) मनुष्य का अस्तित्व क्या है?

3) आत्मा क्या है?

4) आत्मा के रोग क्या हैं?

5) उन से आत्मा में क्या परिवर्तन आता है?

6) उन आत्मिक रोगों से मुक्ति कैसे मिल सकती है?

7) सच्ची मुक्ति क्या है?

8) किसी तीर्थ स्थान पर जाकर पाप नहीं धुलते बल्कि उसके लिए पश्चाताप की आवश्यकता और अपने पहले किए हुए पापों का परिशोध करने की आवश्यकता केवल मात्र देव धर्म में बताई है और प्रैक्टीकल रूप में लोगों ने किस प्रकार रिश्वतों में लिए हुए पैसे वापिस किए हैं। मग़रूर पतियों ने अपने दुर्व्यवहारों के लिए पत्नियों के पैरों में सिर रखकर क्षमा प्रार्थना की है। घमंडी, स्वेच्छाचारी, स्वार्थी बच्चों को माता पिता के लिए सेवाकारी बनाया है।

देव धर्म ही सत्य मुक्ति की परिभाषा बताता है कि सब प्रकार की नीच चिन्ताओं और नीच घृणाओं से मुक्ति ही सत्य मुक्ति है।

मनुष्य का लक्ष्य सुख प्राप्त करना नहीं बल्कि नीच सुखों से मुक्ति और उच्च भावों को विकसित करना है।

वक्ता ने परम पूजनीय भगवान की विज्ञान मूलक सत्य शिक्षा का वर्णन करने के बाद उपरोक्त ब्यान के आधार पर बताया कि: –

देव धर्म ही सच्चा धर्म है, क्योंकि यह नैतिकता और विज्ञान पर आधारित है। जिस धर्म में नैतिकता नहीं, वह सम्बन्धों में सरसता, मधुरता वा एकता नहीं ला सकता। फिर उन्होंने डा० गंगा सिंह जी की उदाहरण बताई कि प्रसिद्ध देहरादून के डाक्टर साहिब ने कैसे अपनी पत्नी के पैरों में पगड़ी रखकर क्षमा मांगी। पंडित कृपा राम जी और साधू जानकी दास जी की ईमानदार बनने के उदाहरण दिए। उन्होंने पूजनीय भगवान की ऐसी अद्वितीय धर्म शिक्षा को हम तक पहुंचाकर महा उपकार किया है, इसलिए साथ ही धन्यवाद सहित यह ब्यान समाप्त किया।

सभापति जी ने माननीय वक्ता का हार्दिक धन्यवाद किया और हाजरीन ने सभा के बाद उन्हें स्पष्ट और सरल भाषा में जो शिक्षा बताई उसके लिए धन्यवाद दिया।

<u>26.12.2015 , महोत्सव का विशेषदिन</u>

:– सुबह 6.30 बजे यात्री किताबों की स्टाल के निकट इकट्ठे होने शुरू होने लगे। कितने ही धर्म सम्बन्धी उच्च भावों से भरकर और श्रद्धा विभोर होकर गुरू महिमा का गान करने लगे। कुछ धर्म सम्बन्धियों की आंखों से पाक आंसू बह रहे थे। गुरूदेव राज जी और पार्टी ने सब की अगवाई की। हर भजन के बाद भगवान देवात्मा की जय जयकार की गई, बहुत प्रभाव दायक मण्डल बन रहा था। सबने परम पूजनीय भगवान के अर्चन के लिए

फूल मालाएं खरीदीं। 7 बजे के आसपास घण्टा बजाकर पूजनीय भगवान के जन्म के समय का ऐलान किया गया और साथ ही उनकी जय ध्वनि के साथ जय जयकार की गई। और "प्रगटे देवगुरू भगवान, जीवन ज्योति देने वाले" नामक भजन का गान पूरे जोर के साथ जय जयकार की गई। बैंड की धुन भी बज रही थी। फिर माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने पाक खुशी और जोश से भरकर अपने, सब सौभाग्यवान यात्रियों के, इस समाज, इस देश, इस दुनिया के सौभाग्य का वर्णन किया कि आज के दिन गुरू महाराज के जन्म के साथ ही हम सबके सौभाग्य के द्वार खुल गए। सत्य और शुभ के अनुरागी, मिथ्या और पाप के पूर्ण शत्रु उदय हो गए। नेचर के विकासकारी नियम का यह अद्भुत क्रिश्मा है अधिकारी आत्माओं का जो शुभ हुआ है, जितने पापाचार, जुल्म, दुराचार, मिथ्या, अन्मेल दूर हुए हैं। सच्चे धर्म युग का आरम्भ हुआ है, उच्च भावों के सुन्दर स्वर्गिय नज़ारे दुनियां ने देखने आरम्भ किए हैं, परिशोध के सुन्दर नज़ारे पैदा हुए हैं, वह सच्चे धर्मावतार परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अविर्भाव के बिना कतई सम्भव नहीं थे। श्रीमान जी जिन उच्च भावों से बोल रहे थे, उससे बहुत उच्च वातावरण पैदा हो रहा था। वह सबको बार बार मुबारकबाद दे रहे थे। उसके बाद चार जय ध्वनि के साथ सारा वातावरण गूंज उठा।

उनके ब्यान के बाद फिर बैंड बाजा बजने लगा, उसकी धुन पर कई धर्म सम्बन्धी भाव विभोर नृत्य करने लगे। कई बजुर्ग स्त्रियां भी नृत्य में शामिल हो गईं। इसके साथ साथ धर्म सम्बन्धी फूलों के सुन्दर हार लेकर पूजनीय भगवान की पवित्र छवि के अर्चन के लिए कतारों में आगे बढ़ने लगे। बहुत ही सुन्दर और पाक दृष्य पैदा हो रहा था।

9 बजे सुबह महा सभा :– भजन के बाद गुरू महाराज का छवि द्वारा सुन्दर फूलों के हार से अर्चन किया गया। देव स्तोत्र के गान और भाव पूर्ण व्याख्या के बाद माननिय सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भाव पूर्ण पूजनीय भगवान के दरबार में आशीर्वाद प्रार्थना की।

जगदीष जी ने बहुत ही सुन्दर आवाज और भावों से भरकर "अद्वितीय जीवन व्रत धारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" नामक भजन का गान किया।

इस सभा का विषय था, "भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य उसकी सिद्धि के लिए उनका अद्वितीय तप और संग्राम, उसके सम्बन्ध में हमारी ज़िम्मेवारियां, धन और जन की अपील।"

सभापति जी ने फरमाया कि इस सभा में हमने अपना ध्यान परम पूजनीय भगवान देवात्मा के परम लक्ष्य और उनके जीवन ब्रत की ओर ले जाना है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा को समझने से पहले नेचर के विकासकारी नियम को समझना आवश्यक है। विज्ञान नेचर का ही सच्चा ज्ञान है। नेचर क्या है? सब जीवित और अजीवित जगत के समूह का नाम नेचर है। नेचर के सब पदार्थ जड़ और शक्ति (Matter and Energy) से बने हैं। यह कभी नष्ट नहीं होती। जड़ और शक्ति की मात्रा नेचर में उतनी ही रहती है। हमारी पृथ्वी सूर्य परिवार का एक भाग है। इसका बनना नेचर के विकासकारी विभाग का काम है। इसमें सदा परिवर्तन होता है, उसी परिवर्तन के अधीन इस पृथ्वी पर अजीवित जगत से जीवित जगत का विकास हुआ। एक सैल के जीव से बहु

सैल जीव पैदा हुए, फिर पशुओं की विशेष नसल से मनुष्य की उत्पति हुई। परन्तु मनुष्य में उन्नतशील बुद्धि शक्ति आई । मनुष्य विकासशील योग्यता रखता है। उचित समय आने पर बड़े-2 साईसदान, फिलासफर, आर्टिस्ट, परोपकारी पैदा होते हैं। और होते रहेंगे। और इस प्रकार समाज का विकास होता ही रहेगा। सती प्रथा, बाल विवाह जैसी भी बुरी रस्मों को दूर करने की चेतना सात्विक पुरुषों में इसी नियम के द्वारा पैदा हुई। तकनीकी विकास से ही मनुष्य चन्द्रमा तक पहुंच गया। इस प्रकार विकास के नियम को समझा जा सकता है। शुरु में हर परोपकारी का विरोध होता है, परन्तु यह विरोध सदा नहीं रहता। नेचर का विकासकारी नियम बहुत बलशाली है। यह आश्चर्यजनक फल पैदा करता है।

भलाई करना, भलाई वा शुभ का अनुराग एक भिन्न चीज़ है। इसकी श्रेणी ही अलग है। यह विकास क्रम की अलग देन है। यह महान परोपकारियों से भी बहुत ऊंची श्रेणी है। बेशक परोपकारी सेवा का काम करते हैं, परन्तु सीमित दायरे में, जिस भलाई करने में उन्हें सुख मिलता है, उसी सीमा तक वह विरोधता और दुख मिलता है।

भलाई या शुभ अनुराग एक भिन्न चीज़ है। परहित अनुराग, कल्याण अनुराग, पाप वैराग्य, सचाई के लिए पूर्ण अनुराग और झूठ के लिए पूर्ण वैराग्य पूर्ण भिन्न प्रकार की शक्तियां हैं। यह श्रेणी देव शक्ति है। इन अद्वितीय देव शक्तियों से विभूषित करके पहली बार देव आत्मा का पुरस्कार दुनियां को मिला। जिससे आज तक सारा मानव जगत ही नहीं चारों जगतों का कल्याण है। बेशक दूसरे जगतों का भला भी मनुष्य जगत से जुड़ा है। उनके भजनों में मनुष्य सम्बन्धी भजन पूर्ण निर्मल हित अुनराग को ब्यान करता है। "भला चाहना मनुष्य मात्र का ऐ इन्सान वाजिब है।" इसमें भगवान ने फरमाया हैं कि मनुष्य की सब तकलीफों का मुख्य कारण उसके नीच अनुराग हैं और उनका समाधान उच्च सात्विक भावों का विकास है। विकास के नियम द्वारा पत्थरों ने विकास कर कोहिनूर का रूप ग्रहण कर लिया, जो अनमोल हीरा है, उसी प्रकार सात्विकता के विकास में देव रूप का विकास अध्यात्मिक कोहिनूर है।

श्री सभापति जी ने बताया कि देवात्मा के भीतर सत्य अनुराग के सारे अंगों ने विकास पाया। आम मनुष्यों का लक्ष्य धन अनुराग होता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव भावों (सत्य और शुभ अनुरागों) की अद्वितीय शक्तियों ने उन्हें निराला जीवन ब्रत ग्रहण करने के लिए मजबूर कर दिया। इस निराले ब्रत के लिए उन्हें मिस मेरी कारपैंटर, महात्मा बुद्ध, मेजर टक्कर बूथ और उनकी धर्म पत्नी से प्रेरणा मिली। 25 दिसम्बर 1982 को पूजनीय भगवान ने जीवन ब्रत धारण किया :-

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार में ही जीवन यह जावे।"

मानवता से पाप और मिथ्या मिटाने और देव राज लाने का उन्होंने बीड़ा उठा लिया। परन्तु इस महोच्च ब्रत को पूर्ण करने के लिए उन्हें असह्य दुख, उत्पीड़न और कष्टों में से गुजरना पड़ा। ऐसे हितकारी को जेल भेजने का यत्न किया गया, उन्हें मारने के लिए इश्तिहार बांटे गए। उनके पूर्णकोमल हृदय को छलनी छलनी

किया गया। इतने गन्दे और घिनौने इल्ज़ाम लगाए गए। उन्हें अनेक पापों का कर्ता बताया गया। भगवान देवात्मा फरमाते हैं कि इन कष्टों से कितनी बार वह मृत्यु के आते – 2 बचे हैं। उन दुखों ने उनका हृदय इतना घायल कर दिया कि स्नायु प्रणाली चकनाचूर हो गई। शरीर रोगों का घर बन गया। इन दुखों का ब्यान करते हुए सभापति जी का दिल भरभर कर आता था।

फिर उन्होंने उनके कानूनी उत्पीड़न के विषय में वर्णन किया। संक्षेप में मुकदमों के दर्दनाक दुखदाई हालात बताए जो हमारे भले के लिए उन्होंने सहन किए। उन सबका कुछ कुछ ज़िकर किया और बहुत लोगों ने उनको सताया, मुकदमे किए, नाम मात्र लेकर ही उस ओर ईशारा किया। परन्तु इन दुखों कठिनाइयों में से गुज़रकर भी फतह सचाई की हुई और देवात्मा का कारज और उनका व्यक्तित्व और भी निखर कर सामने आया। उनके विरोधियों को हार का ही नहीं शर्मिंदगी का भी सामना करना पड़ा।

अन्त में सभापति जी ने इस परम हितकर कारज के लिए धन और जन की अपील की, दो जन सेवक भी बने और अपना समस्त जीवन इस कारज में समर्पित करने के लिए वायदा किया। धन की अपील पर बहुत अच्छा Response मिला जिसकी लिस्ट आगे दी जाएगी।

बच्चों की सभा : – 2 बजें दोपहर

12 साल से कम उमर के बच्चों ने इसमें भाग लिया। श्रीमती सुरजीत बराड़ ने हर साल की तरह इसे conduct किया, डा० सतिन्द्र ढिल्लों और श्रीमती सरोज जी कुक्कड़ ने उनकी सहायता की। इस बार सुरजीत बराड़ ने गुरु महाराज से सम्बन्धित बहुत छोटी – 2 पू० भगवान के जीवन की घटनाएं, जो बच्चों के लिए बेहद शिक्षाप्रद थी, लिखकर गुरूदेव राज जी को भेज दी थीं, उन्होंने बहुत अच्छी तरह से बच्चों को तैयार किया, कुछ बच्चे अंग्रेजी में भी बड़ी योग्यता के साथ बोले और साथ साथ सुरजीत जी ने उन घटनाओं की व्याख्या करते हुए उस सभा को बहुत रोचक बना दिया।

संगीत सभा – बच्चों की सभा के बाद उसी समय डा० विनोद जी खेड़ा की Institute के बच्चों ने पूरे साज़ों के साथ संगीतों का गान किया, 5 – 6 भजनों का गान किया। बच्चों ने अपनी पढ़ाई के साथ जो स्वयं इन भजनों के गाने की practice की, वह संग्राम बहुत ही सराहनीय है। इसके लिए इतने Busy होने के बावजूद डा० खेड़ा ने स्वयं बैठ बैठकर उन भजनों को भावपूर्ण बनाया, सुनील दत्त जी ने संगीत पार्टी के साथ बहुत मेहनत की, वह सब हमारे धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं। भजनों के गान से बहुत सुन्दर और भावपूर्ण वातावरण और अगले लैक्चर सुनने के लिए दिल तैयार हो गए। सब ने ही इस प्रोग्राम को बहुत सराहा।

पब्लिक लैक्चर शाम 4 बजे

वक्ता – डा० श्री विनोद चन्द्र जी खेड़ा ।

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

सर्वप्रथम एक भजन के गान के बाद सभापति जी ने डा० साहिब का बहुत प्रशंसनीय शब्दों में परिचय कराया। उनकी मान्सिक वा हार्दिक योग्यताओं का बहुत ही सराहनीय ढ़ंग से वर्णन किया।

इस लैक्चर का विषय था "मनुष्य की बर्बादी और विनाश से रक्षा और जीवन का वरदान"

डाक्टर खेड़ा साहिब ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है, सुख से जीना चाहता है। मनुष्य की सबसे बड़ी यही इच्छा है। इसके बावजूद मानवता में, आत्मघात और आत्मघाती हमलें क्यों हो रहे हैं। बड़े – 2 शिक्षा संस्थानों में I.I.T., A.I.I., M.S.P. में विद्यार्थियों में आत्म हत्या आम बात है।

इन प्रश्नों का उत्तर समझाने के लिए कि मूल रूप से मनुष्य सुखों का गुलाम है, जिसको देव समाज की भाषा में नीच सुख अनुराग कहते हैं। मनुष्य के यही नीच सुख अनुरागों की गुलामी उसकी बर्बादी वा विनाश लाती है। इस बात को समझाने के लिए उन्होंने एक कल्पित कहानी का सहारा लिया। यान में कुछ देवता पुरूष गुज़र रहे थे। उन्होंने एडम शहद को चाटते और शहद की मक्खियों से काटे जाते देखा, दया भाव से भरकर उन्होंने ऐडम से उनके यान में वहां से बच निकलने की प्रार्थना की परन्तु ऐडम के स्वाद सुख की गुलामी क्या जो उसे अपने बचावनहारों के साथ जाने देती, वह वहीं शहद चाटता और शहद की मक्खियों द्वारा काटा जाता अपने जीवन की बबार्दी करने पर मजबूर था।

डा. खेड़ा ने अनूपगढ़ राजस्थान के निवासी श्री नोध सिंह जी की सच्ची जीवन गाथा सुनाई जो एक शरीफ सिक्ख खानदान में जन्मे थे और 25 वर्ष की आयु में अपनी पत्नी सहित फाजिलका में आकर सर्राफ का काम करने लगे। शुरू – 2 में उन्हें पाप कर्मो से बहुत घृणा थी परन्तु धीरे – 2 वह अत्यधिक बेईमान, मांसाहारी, शराबी (3 – 3 बोतल शराब की पी जाने वाले) तम्बाकू, भंग, अफीम खाने वाले, वैश्याओं के घर जाकर नाच मुजरा करने वाले इंसान बन गए। अपनी नेक धर्म पत्नी पर अत्याचार करने लगे। सौभाग्यवश इन्हें भगवान देवात्मा की पाप उद्धारिणी और उच्च जीवन प्रदान करने वाली धर्म संगत मिली और इनके जीवन में एक – 2 पाप कर्म छूटते चले गए और ऐसे गए गुज़रे इन्सान के जीवन से विशुद्ध परोपकार के काम आरम्भ हो गए। इनके खानदान में लगभग 200 व्यक्ति थे जिनमें से इनके जीवन के उच्च परिवर्तन को देखकर उनके जीवनों में भी हद दर्जे की बेहतरी आनी आरम्भ हो गई। इनकी धर्मपत्नी के भतीजे श्री जगदीश प्रशाद जी ने भी अपने जीवन की बर्बादी और भगवान देवात्मा की शरण में आकर उससे बचने की संक्षिप्त गाथा सुनाई

श्रीमान जगदीश प्रशाद जी कुक्कड़ (जो श्रीमान नौध सिंह जी के भतीजे हैं) ने भी अपने पूरी तरह से बरबाद होते हुए जीवन की गाथा सुनाई जिसे सुनकर श्रोतागण के रोंगटे खड़े हो गए। उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक से बढ़कर एक बुराईयां उनके जीवन में सातवीं कक्षा से आ गई थीं और कैसे परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की महोत्सव की भाव प्रकाश की एक सभा ने उनके जीवन में क्रांति पैदा कर दी और वह बरबादी और विनाश से बचकर उच्च जीवन की बरकतें पाने के योग्य होते चले गए।

27.12.2015 सुबह 9.30 बजे : – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी । इस सभा में सेवक बनाने का कार्यक्रम था। पहले गुरू महाराज का छवि द्वारा सुन्दर फूलों के हार से अर्चन किया गया। फिर चार सौभाग्यवान जनों का सुन्दर हृदय परिवर्तन बताकर उनका परिचय कराया गया। उनका परिवर्तन सचमुच ही पूजनीय भगवान के प्रभावों की करामात है। फिर सभापति जी ने

सेवकी की प्रतिज्ञाओं का बड़े सुन्दर शब्दों में महत्व बताया। फिर उन चार जनों को सेवकी की प्रतिज्ञाएं करवाई गईं और फूलों के हारों से उन्हें लाद दिया। उनके सेवक बनने की खुशी में बहुत से जनों ने दान दिया।

1) श्री बी. पी. सिंह पदमपुर टैलीकाम महकमें में अफसर हैं।

2) श्रीमान साधु रमेशवर चन्द्र जी, बी.टैक पदमपुर

3) श्रीमान महीपाल सिंह मुज्जफरपुर

4) श्री शुभ रत्न सिंह जी कालरा (डा० नवजोत जी के पुत्र और श्रीमान सीता राम जी के पोते हैं)

फिर इन जनों का फोटो लिया गया।

भाव प्रकाश की सभा

27.12.2015 : सेवकों की सभा के फौरन बाद भाव प्रकाश की सभा हुई। इसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। पहले उन्होंने महोत्सव मुबारक के सारे प्रोग्राम का संक्षिप्त वर्णन किया और हाजरीन से अपने भावों का प्रकाश करने के लिए अपील की।

श्री शौर्य जी : (श्री अकबरपुर) नाना जी (श्रीमान किशन सिंह जी चौहान) जिनकी कृपा से मुझे यह दर मिला। मैं अपनी गल्ती स्वीकार करता हूं अपनी एकाकारी न लाने के कारण बहुत दुखी हूं। बहुत सन्मान के योग्य श्रीमान सुखदेव सिंह जी इंगलैंड़ के संग्राम को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूं। मैं भी सेवाकारी बनूंगा, ज़ोरदार प्रेरणाएं पैदा होती रही हैं। मैं बार बार सत्संग में पहुंचने की कोशिश करूंगा (इस नौजवान में अच्छे भावों की झलक दिखती थी)।

श्रीमान जगजीत सिंह जी मुझे अपने भीतर कुछ कुछ परिवर्तन अनुभव हो रहा है। जिस प्रकार भगवान ने घंमड के बारे में रोशनी दी, तो साफ दिखाई देता है कि जन्म दूसरों ने दिया, कई उपकारियों ने पाला – पोसा, टीचरों ने पढ़ाया, बुनकरों, दर्जियों ने पोशाक दी। डाक्टरों ने बार बार मरने से बचाया। मैं किस बात से अकड़ता हूं। मन मन में बहुत नम्रता लाने की आवश्यकता है। समाज का ऐसा पुर्जा बन सकूं जो कुछ मिशन में काम आ सकूं। गुरू महाराज की शिक्षा को समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हानि परिशोध करना भी ज़रूरी है।

सम्बन्धों में जीना है, सम्बन्धों में हितकर नेता की बहुत आवश्यकता है। अपने सम्बन्धों में जाग्रित होने की अधिक ज़रूरत महसूस हुई है। जब तक दूसरों के लिए कुछ नहीं करते, तब तक जीवन बेकार है। जहां भी अच्छाई वा गुण मिलें, उन्हें ग्रहण कर लेना चाहिए। समाज की सेवा करने का भाव बढ़ा है।

श्री रजिन्द्र जी देहरादून : मेरी पत्नी ने 300 रूपये उधार लेकर मुझे कल्याण भेजा था। मेरा भयानक नशई जीवन उस सत्संग में (10 – 11 साल पहले) एकदम बदल गया। खतौली के बाबा नरिन्द्र जी धीमान ने मुझे इस जगत के साथ जोड़ा है। एक बैंक मैनेजर साहिब ने मुझ पर बड़ा उपकार किया जो मुझे लोन दिलवाया। मेरी श्रीमती जी ने मुझे बड़ा सहयोग दे दे कर मुझे बचाया है। बेहद भटक रहा था। इस कदर शराब पीता था कि सुबह 5 बजे ही शुरू कर देता और रात 2 – 2.30 बजे तक पीता रहता। जब तक सारे ठेके बंद न हो जाते। श्रीमान सीता राम जी याद आते रहते हैं। वह मुझे सदा इस दर से जुड़े रहने का उत्साह देते और कहते कि मैं भी यहीं आकर बचा हूं, मैं कच्चा मांस खा जाता

था। सब सभाएं एक से एक बढ़कर थीं। मैं सदा सदा इस दर से जुड़ा रह सकूं।

साधु रामेश्वर चन्द्र जी पदमपुर (नए सेवक) - मैंने B.Tech. की, फिर थोड़ी देर नौकरी की। नौकरी जल्दी छोड़ दी, फिर आर्य समाज में रहा, फिर स्वामी गुर्वानन्द जी से बहुत प्रभावित हुआ। उनके पास रहा। यहां आने पर यहां की शिक्षा और कार्य ने मुझे बदल कर रख दिया है। इस मिशन में रहकर, इसमें सेवाकारी होकर इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिए संग्राम करना, अपना महान सौभाग्य महसूस होवेगा। मैंने कई साल स्वामी रामदेव जी के पास रहकर आयुर्वैदिक इलाज के बारे में भी काफी सीखा है। इसके द्वारा मैं पहिले ही सेवाकारी हो रहा हूं। करीबन साल से मैं इस मिशन की पुस्तकों का ध्यानपूर्वक पाठ कर रहा हूं। मेरी श्रीमान बी. पी. सिंह जी और श्रीमान डाक्टर मुनशा सिंह जी ने बहुत सहायता की है और कर रहे हैं।

सुरेश कुमार जी (केसूपुर, सिरसा) - सबसे पहले मैं आदरणीय सभापति जी का धन्यवाद करता है जो इस उमर में भी दिन रात एक करके हमारा जीवन सुधारने के लिए इस कदर संग्राम कर रहे हैं। सब लोग बहुत शांति के साथ इस प्रोग्राम को चला रहे हैं। श्रोतागण भी कमाल खामोशी के साथ बैठ कर सभाएँ सुन रहे हैं। श्रीमान सुखदेव सिंह इंगलैंड जी ने मुझे यहां invite किया है। श्रीमान सरताज सिंह जी प्रिन्सीपल ने मुझ पर काफी काम किया है। यहां आकर मुझे कुछ अपनी कमियां दिखाई दी हैं। मैं डेरा सच्चा सौदा के साथ पिछले 22 सालों से जुड़ा हुआ हूं लेकिन यहां आकर पता लगा है कि जीवन क्या है? मुझे नज़र आया है कि इस जगह जीवन बदलने का काम होता है। प्रेरणा हुई है कि यहां से जुड़कर जीनव सुधारना है।

माता जी से बहुत बहुत सेवा पाई है। मेरे भाई के हाथ बेकार होने जा रहे हैं, फिर भी वह बहुत सेवाकारी होते हैं। मैं बहुत आलसी हूं। मेरे अंदर बहुत कमिया हैं। यहां से जोरदार प्रेरणा लेकर जा रहा हूं कि मैं इस समाज में रह कर और सेवा करके खुद को बदल सकूं और सत्संग के साथ ज़्यादा से ज़्यादा जुड़ सकू और बुरी संगत से बच सकूं।

पहले ईश्वर को लेकर ही धर्म के साथ जुड़ा हुआ था। यहां आकर अपना गंवारपन, अपनी अनपढ़ता और तुच्छता दिखाई दी है। सुखदेव जी का बहुत धन्यवादी हूं। वह गांव की बहुत सेवा कर रहे हैं। (सुखदेव जी ने खड़े होकर बताया कि यह नौजवान हिन्दी साहित्य के अच्छे जानकार हैं। हिन्दी में बहुत कुछ लिखने की योग्यता रखते हैं। गांव में कई प्रकार की सेवा करके लोगों की तकलीफ और कष्ट दूर करने का यत्न करते रहते हैं। यह ज़्यादा से ज़्यादा लिटरेचर पढ़ें और आगे फैलाएं।

सुखदेव जी लंदन :- 24 दिसम्बर से लेकर जितनी सभाएं अब तक हुई हैं, वो सब बहुत प्रभावशाली थीं। मुझे लगता है कि आज तक जितने भी महोत्सव हुए हैं, यह सब से बढ़िया महोत्सव हुआ है। अपना महा सौभाग्य महसूस होता रहा है, "सतगुरू जी आपके चरणों में यह सिर झुकाने के काबिल नहीं" वाला भजन सुन कर मैं हिल गया। इस भजन के बोल गहराई तक मेरे हृदय में घर कर गए। मैं सारी रात, चार सवा चार बजे तक इस सोच में पड़ा रहा कि सचमुच ही, वास्तव में

मनुष्य का रूप इतना दुर्बल है कि वह देवरूप के आगे सिर झुकाने के काबिल नहीं है। इंगलैंड में फौज के मेजर जनरल साहब ने मुझे एक जगह लैक्चर देने के लिए कहा, मैंने उन्हें अपनी मजबूरी बताई कि मैं ईश्वर का विश्वासी नहीं हूं। उन्होंने फिर भी मुझे लैक्चर देने का अवसर दिया। हृदय में बार बार आता है कि नेचर के आगे प्रार्थना करूं कि हे नेचर! तू ने देवात्मा जैसी अलौकिक हस्ती तो दे दी है, हमें उन्हें देखने के लिए आवश्यक श्रद्धा की आंख भी दो जिससे मैं उन्हें किसी अंश देख सकूं। कनल जी ने (Dev Atma, Life and Teachings) मास्टर ग्रन्थ दे दिया है, मानवता पर यह बड़ा उपकार है। किसी और ने (काका जी को छोड़कर) अंग्रेजी में कुछ अधिक नहीं लिखा। महा सभा में गुरू महाराज के दुख और यातनाओं की तड़पन बहुत हिलाती रही और बेबसी महसूस करवाते रहे। गुरू को हमारी ज़रूरत नहीं, हमें उनकी ज़रूरत है। जिनके लिए भी संभव हो, अंगेज़ी में लिटरेचर लिखें और अंग्रेजी साहित्य पैदा करें। उपरोक्त जनरल ने मुझ से पूछा कि मेरी future planning क्या है? मैंने कहा देव समाज की सेवा करनी है। वह इस कदर प्रभावित हैं कि उन्होंने कहा कि इसके लिए हर वक्त किसी भी ज़रूरत के लिए मैं हाज़िर हूं। मैं एक नीच जीवन धारी किसी की क्या सेवा कर सकूंगा। जब तक गुरू महाराज जी के लिए श्रद्धा न होगी, तब तक सारी कोशिशें निष्फल रहेंगी। गुरू महाराज ने हमारे गांव का बहुत भला किया है। दर्जनों परिवार देवात्मा के श्रद्धालु और सेवक बन गए हैं। यह महोत्सव मुझे बेहद विशेष और महान महसूस होता रहा। मेरा सिर्फ और सिर्फ एक ही मिशन है, सब कुछ देव समाज की सेवा के लिए करना है, और कर सकूं।

श्री रमेश जी :– (देवाश्रम की देख रेख करने वाले) मैं सबको मुबारिकबाद देता हूं। बहुत लोगों ने बहुत अच्छा योगदान दिया है जिस के कारण यह समागम बहुत अच्छी तरह कामयाब हुआ है। फिर उन्होंने अपनी बहुत दिलकश सुरीली आवाज़ में एक पद गाया।

"मैं नीवा ते मेरा मुरशद उच्चा..." अपनी गहरी नम्रता का प्रकाश किया। सेवाओं में कमी रहने के लिए क्षमा याचना की।

प्रिन्सीपल डाक्टर श्रीमती सतिन्द्र ढिल्लों :– श्री सुखदेव जी लंदन को सुनकर मुझे अपने आप पर बहुत शरम आती रही है। हर सभा में अपनी कमियां नज़र आती रहीं। गुरू महाराज का देव रूप इस तरह पहले कभी नज़र नहीं आया। कालिज की प्रिन्सीपल रहते हुए बिजली बुझाने में इतनी careful नहीं थी क्योंकि उस वक्त बिजली का बिल कालिज देता था। अब मैं ज़्यादा ध्यान रखती हूं, यह भी एक किस्म की बेइमानी है। दूसरा कालिज के दिनों में मेरा बेटा computer आदि का इस्तेमाल करता था जिसका खर्चा भी कालिज पर पड़ता था। वह खर्चा अब सामने आकर मुझे सता रहा है और दुखी कर रहा है। उस सब का मैं परिशोध करने का यत्न करूंगी। मेरी एक और कमज़ोरी आलस की भी है। अलार्म लगा कर भी 10 – 10 मिनट करके सोती रहती हूं। उसमें भी सुधार की पूरी कोशिश करूंगी। मेरी और

बड़ी कमज़ोरी है कि मैं किसी को भी पहुंचने का समय देकर हमेशा लेट हो जाती हूं, इस तरह मैं दुख देती हूं, वह महसूस हो रहा है। मेरी बड़ी बहिन जी को इससे बहुत तकलीफ होती है। मैंने यह भी महसूस किया है कि दूसरों की प्रशंसा सुन कर जितनी खुशी होनी चाहिए, वह नहीं होती। इसका मतलब है कि मुझ में किसी हद तक ईर्षा भी है। एक और ग़ल्ती मेरे सामने आती है कि मेरी बड़ी बहिन जी मेरे भले के लिए कई बातें कहती हैं, मैं चुप तो रहती हूं, पर कई बार बुरा लगता है। मैं सुन सब की लेती हूं पर करती अपनी ही मर्ज़ी हूं। इसलिए इस स्वेच्छाचारिता को भी सुधारूंगी।

सभापति जी के लिए दिल झुक रहा है। मेरा हर सत्संग में जाकर शामिल होने का दिल करता है। मेरे में गुस्सा भी पैदा होता है। मुझे बहुत अच्छे भाई बहिन मिले हैं।

प्रिन्सीपल श्री सरताज सिंह जी M.A. :– प्रवेश सभा में ही मुझे अपनी गल्तियां नज़र आईं। श्रवण कुमार माता पिता के भक्त थे, यहां खेम चंद जी, अपने दृष्टिहीन पिता जी को जिस तरह हर सत्संग में लेकर आते हैं और जिस प्रकार उनकी सेवा करते हैं, मेरा उनके चरणों में सिर झुकता है। मेरा अपनी तरफ और अपने माता पिता की तरफ ध्यान जाता रहा, अपनी सेवा में कमी अखरती रही है। श्रीमान जगदीश जी का संग्राम महोत्सव की तैयारियों के संबंध में परिश्रम और इतनी भाग दौड़, उनके लिए सम्मान महसूस कराती रही है। रमेश जी का सारा परिवार किस प्रकार सेवा में समर्पित रहा है, वह दिखाई देता रहा है। मैं प्रिन्सीपल हूं, इसलिए कई सेवादार मिले हुए हैं, इससे दिमाग खराब हो जाता है। घमंड बढ़ जाता है। अपने आप को हकीकत से ज़्यादा बड़ा समझ कर अपनी धर्म पत्नि जी को बुरा भला कहा है। उनके साथ अनुचित घमंड और सख्ती से पेश आया हूं। यहां बैठ कर बहुत महसूस हो रहा है कि मैंने बहुत बुरा सलूक किया है। हाथ जोड़कर इनसे माफी मांगता हूं। उन्होंने पत्नि के पास पहुंच कर, सारी सभा में पत्नि के चरणों में सिर रख कर माफी मांगी (यह नज़ारा फरिश्तों के देखने वाला था)। इनके मायके के परिवार को संगत में लाता हूं ताकि मेरी तरह उनका भी भला हो सके। मैं बहुत ही घमंडी इन्सान बन रहा हूं, यहां आकर यह महसूस हो रहा है।

सन्मान प्रदर्शन :– देहरादून के श्रीमान राजेन्द्र जी और उनकी धर्म पत्नि का सम्मान किया गया। उन्होंने सारे परिवार सहित महोत्सव पर पहुंच कर लाभ उठाया है। 24 तारीख से ही उन्होंने सारे आश्रम के भवन को, हर बिल्डिंग को, पेड़ पौधों तक पर शानदार रोशनी की लड़ियां लगाकर जिस प्रकार जगमग करके सजाया है, यह उनके हृदय के प्रेम का सबूत है। प्रबन्ध की ओर से उन्हें स्टेज पर बुला कर, उनकी सेवा की सराहना करके, सैक्रेटरी जी ने उन दोनों को फूलों के हार पहना कर अच्छी नकदी के इलावा और भेंट देकर सम्मानित किया। जिससे बहुत ही सुन्दर दृष्य पैदा हुआ। उनका सारा परिवार खुशी के साथ झूम उठा। पवित्र आंसू बहाते हुए पत्नि कह रही थी – हम इस काबिल नहीं है।

इस अवसर पर करीबन 4 हज़ार रूपये की पुस्तकें लोगों ने खरीदीं। दान भी सवा दो लाख रूपये के करीब हुआ। यात्रियों की हाज़री भी अच्छी उत्साहित

बाकी पेज 2 पर

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका

सम्वत् 2069 – 2070 विक्रमी सन् 2013 ई.

सं	वार्षिक साधनों के विषय	साधन का विशेष दिन	हिन्दू त्योहार
1.	मात – पिता और सन्तान के सम्बन्ध में	27 जनवरी, बुधवार	गणेश चौथ
2.	भाई बहनों के सम्बन्ध में	12 फरवरी, शुक्रवार	बसन्त पंचमी
3.	देव समाज के सम्बन्ध में	3, 4 मार्च, वीरवार, शुक्रवार	
4.	पति – पत्नी के सम्बन्ध में	23 मार्च, बुधवार	होली
5.	उद्भिद जगत के सम्बन्ध में	8 अप्रैल, शुक्रवार	नव सम्वत्
6.	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	23 अप्रैल, शनिवार	
7.	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	20 मई, शुक्रवार	नृसिंह चतुर्दशी
8.	स्वदेश के सम्बन्ध में	10 जून, वीरवार	निर्जला एकादशी
9.	साथी सेवकों के सम्बन्ध में	18,19 जुलाई, सोमवार,मंगलवार	व्यास पूजा
10.	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में	17, 18 अगस्त, बुधवार, वीरवार	रक्षा बन्धन
11.	पशु जगत के सम्बन्ध में	9 सितम्बर, शुक्रवार	राधा अष्टमी
12.	परलोक के सम्बन्ध में	30 सितम्बर, शुक्रवार	अंतिम श्राद्ध
13.	स्वजाति के सम्बन्ध में	11 अक्तूबर, मंगलवार	दशहरा
14.	भौतिक जगत के सम्बन्ध में	30 अक्तूबर, रविवार	दीपावली
15.	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	14 नवम्बर, सोमवार	गंगा स्नान
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में	12, 13, 14, 15 दिसम्बर सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार 14 दिसम्बर बुधवार विशेष दिन	

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts